P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- X* March- 2016

# मानस एवं पर्यावरण विज्ञान

**ममता सहगल**
सहायक प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
श्री गुरूनानक महिला महाविद्यालय,
जबलपुर

**सारांश**

प्रकृति मनुष्य की चिरसंगिनी रही है। मनुष्य के हृदय में प्रकृति के सौन्दर्य का चिरस्थायी प्रभाव पड़ता है। तुलसी की पवित्र वाणी भी प्रकृति की चिर–सुषमा को प्रकट करती है। प्रकृति के साथ ऐक्य स्थापित करके मानव को यह संदेष देती है कि राष्ट्र से प्रेम करो उसके पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाओ। वर्तमान में भारत देश के संतों द्वारा मावन कल्याण के लिये गए प्रयास प्रासंगिक हैं।

**मुख्य शब्द** : सगुण काव्धारा, भक्ति, समन्वय, आदर्श।

**प्रस्तावना**

साहित्य समाज का दर्पण होता है। तुलसीदास जी ने समसायिक समाज को अपने साहित्य में स्थान दिया है। तुलसीदास जी हिन्दी साहित्य के अन्य महारथियों के समान राम भक्ति शाखा के कवि हैं। आप एक अनंत समन्वयात्मक शक्ति लेकर साहित्य क्षेत्र में अवतरित हुये। आपने ज्ञान–भक्ति, निर्गुण–सगुण, शैव–शाक्त–वैष्णव आदि संप्रदायों का समन्वय किया है। सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ आपका साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय एवं आदर्श भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आपने पूर्ववर्ती और समकालीन संपूर्ण काव्य रचना को अपने काव्यांचल में समेटकर उनको प्रभावशाली बना दिया है। तुलसी की पवित्र मानस–भूमि से उदभूत शुभ संदेश संपूर्ण विश्व के मानवों के लिये कुशल पथ प्रदर्शक है।

रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास लोगों के हृदय में शासन करने वाले मध्यकालीन संतो के शिरोमणि सगुण काव्य धारा के प्रमुख कवि हुए है। तुलसीदास जी ने अनगिनत ग्रंथ लिखे परंतु उनमें से लगभग बारह पुस्तकें ही प्रामणिक रूप से स्वीकृत है। सभी पुस्तकों में रामचरित मानस सवाधिक लोक प्रसिद्ध ग्रंथ है। मानस का स्थान हिंदी साहित्य में ही नहीं, जगत के साहित्य में भी निराला है। यह एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें साहित्य के सभी रसों का आस्वादन करने वाला, काव्य कला की दृष्टि से उच्च कोटि का तथा आदर्श परिवार, आदर्श राजा, आदर्शवादी भ्राता, आदर्श पिता, आदर्श माता, आदर्श पुत्र के साथ–साथ पतिव्रत धर्म का अनूठा संग्रह है। तुलसीदास जी ने मानस में ज्ञान, भक्ति तथा कर्म में समन्वय स्थापित किया है। इसमें वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा का अद्वितीय वर्णन है।

रामचरित मानस एक ऐसा आशीर्वादात्मक ग्रंथ है जिसे अमीर–गरीब, शिक्षित–अशिक्षित, गृहस्थ संन्यासी, नर–नारी, बालक–वृद्ध और युवा सभी श्रेणी के लोग आदर पूर्वक पाठन एवं श्रवण करते हैं। मानस को आध्यात्मिक श्रेणी में सर्वोत्तम माना गया है। इसमें भगवान राम की बाल लीलाओं से लेकर सगुण–साकार ईश्वर का, गुरू भक्ति, नाम स्मरण रहस्य तथा अद्वितीय प्रेम का अत्यंत रोचक एवं प्रभावपूर्ण वर्णन किया गया है। पाठक मानस के प्रेम एव भक्ति रस में डूबता ही चला जाता है एवं अद्वितीय शांति का अनुभव महसूस करता है।

केवल भारत में ही नहीं अपितु संसार के अन्य देशों में भी मानस जैस ओजस्वी शब्दों को व्यक्त करने वाला कोई दूसरा ग्रंथ नहीं है। इस ग्रंथ का हिन्दी में ही नहीं भारत की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने पारिवारिक क्षेत्र, सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आदि सभी विचारों में समन्वय स्थापित किया। परंतु मानस का मुख्य उद्देश्य राम कथा के माध्यम से परमार्थ के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करना है। तुलसी ने अपने अराध्य राम को नर एवं नारायण दोनों ही रूप में चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त पॉच भिन्न जातियों के पात्रों का भी विचार अपने ग्रंथ में किया है– देव, दानव, नर, वानर, और तियैक।

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- X* March- 2016

**उद्देश्य**

मानव एवं पर्यावरण का संबंध यह स्पष्ट करता है कि पर्यावरण का प्रभाव हमारे ऊपर नि"चत रूप से पड़ता है। मानव जीवन का संचालन–पोषण प्रकृति के द्वारा ही होता है। आका"ा, सूर्य, तारागण, इन्द्र धनुष, नदियाँ, सागर, झरने, प"ाु पक्षी आदि को देखकर मन प्रसन्नचित हो जाता है। सागर की गहराई, नदी के लहरे, हरे भरे खेत आज भी हमारे दुखी मन का प्रेरणा देते हैं। हम प्रकृति के प्रति अपना प्रेम प्रकट करते हैं। वह हमारे दुख से दुखी एवं सुख से सुखी पतीत होती है।

मानस की महिमा का गुणगान करते हुए स्वयं गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है –

रामचरितमानस एहि नामा।
सुनत श्रवण पाइअ विश्रामा।
मन करि विषय अनल बन जरई।
होई सुखी जौं एहिं सर परई।।

**(मानस पृ. 41)**

अर्थात् इस ग्रंथ का नाम रामचरितमानस है। इसको कानों द्वारा सुनने से आँतरिक शाँति मिलती है। मन रूपी हाथी जो विषय वासना की आग में जल रहा है इस मानस रूपी सरोवर में समाकर सुखी हो जाता है।

मानस तथा पर्यावरण का घनिष्ठ संबंध है। मानस में हर एक स्थान में प्रकृति का सहारा लिया गया है। बालकांड से ही मानस में सृष्टि के अनन्त प्रसार की झाँकी प्रस्तुत की गई है। अनगिनत पर्वत, (कैलाश, मलय विध्यांचल सुमेरू) नदियाँ (सरयू, यमुना, मंदाकिनी, सोण, गोदाबरी, तमसा, गोमती, गंगा, सरस्वती, नर्मदा तथा रोज) (दोनो ही नदियाँ अमरकंटक पर्वत से निकल कर एक खम्भात की खाढ़ी तथा दूसरी गंगा में मिलती है। 'मानस' में शोण का उच्चारण पुल्लिंगवाची महानद से हुआ है।) समुद्र, सरोवर, जलचर जीव, वन्य जीव–जन्तु, पशु–पक्षी (साँप मछली हाथी, सिंह गाय, गद्हे, सियार, हंस, कौए, नीलकंठ, कोयल, तोते, चकवा–चकोर, वानर, भ्रमर, कामधेनु गौ, मोरनी, घोड़े, सुअर, वृषभ), तरू–तृण, वन–लताएँ, सूर्य चंद्रमा अन्य ग्रह जैसे सौर मण्डल है– और ये सभी नियम बद्ध रूप से चलते रहते है। मानस में छहों ऋतुओं का जो परम पवित्र एवं अत्यंत सुहावनी है का भी अत्यंत मनोहारी वर्णन है। मानस को पढ़ने में जो रोमांच होता है वही वाटिका, बाग और वन है और जो सुख होता है वही पक्षियों का बिहार है।

मानस के बालकाण्ड में संत और असंत की तुलना कमल एवं जोंक से की गई है। तुलसी कहते हैं कि कमल (अर्थात्– साधु या संत) दर्शन एवं स्पर्श से असीम सुख की प्राप्ति होती है किन्तु जोंक (अर्थात्– असाधु या असंत) शरीर का स्पर्श पाते ही रक्त चूसने लगती है –

उपजहि एक संग जग माहीं।
जलज जोंक जिमि गुन बिलगाही।।

**(रामचरित मानस पृ. 8)**

मानस में ही काकभुशुण्डि अपने ईष्टदेव श्री राम के बालक–रूप की बाल क्रीड़ाओं का आनंद लेने के लिए काग रूप धारण कर महल में जाते हैं पर जब राम किलकारी मारते हुए पकड़ने जाते हैं तब वह दूर भाग जाता था और जब काग राम के चरणों को स्पर्श करना चाहते हैं तो वे दूर भाग जाते हैं। इसी प्रकार मानस में मनुष्य का पशु–पक्षियों को घनिष्ठता से जोड़ा गया है। इसी तरह पृथ्वी, जल, वायु, और आकाश बाहरी तथा मानस वृद्धि एवं अहंकार का आपस में खूब गहराई से जुड़े हैं। मानस का यह दोहा इस बात का प्रमाण है –

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।
पंचतत्व रचित यह शरीरा ।।

अर्थात् प्रकारान्तर में इसे ही इकोलाजी के रूप में माना गया है। सत्यता तो यह है कि समय, समाज और सभ्यता के बावजूद भी पर्यावरण एवं मानव जीवन के संबंध शाश्वत है। संबंधों की महत्ता भी अक्षुण्ण है। मानस और प्रकृति एक दूसरे के पर्याय है। मानस में प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –

नव पल्लव फल सुमन सुहाए।
नित संपति सुर रूख लजाए।
चातक कोकिल कीर चकोरा।
कूजत बिहग नटत कल मोरा।।
मध्य बाग सरू सोह सुहावा।
मनि सोपान विचित्र बनावा।
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा।
जल खग कूजत गुंजत भृंगा।।

**(मानस पृ. क. 207)**

अर्थात् नये पत्तों, फलों और फूलों से युक्त सुंदर वृक्ष अपनी सम्पत्ति से कल्पवृक्ष को भी लजा रहे है। पपीहे, कोयल, तोते, चकोर, आदि पक्षी मीठी बोली बोल रहे हैं और मोरें सुंदर नृत्य कर रहें हैं। बाग के बीचों – बीच सुहावना सरोवर सुशोभित है, जिसमें मणियों की सीढ़ियाँ विचित्र ढंग से बनी है। उसका जल निर्मल है जिसमें अनेक रंगों के कमल खिले हुए हैं, जल के पक्षी कलरव कर रहे हैं और भ्रमर गुंजर कर रहे हैं।

मानस के एक अन्य स्थान पर सरयू नदी के महत्ता इस प्रकार से की गयी है कि दर्शन मात्र से ही मनुष्य के समस्त पापों का नाश हो जाता है–

दरस परस मज्जन पाना।
हरइ पाप कह बेद पुराना।
नदी पुनीत महिमा अति।
कहि न सकर सारदा विमल गति।।

**(रामचरित मानस पृ. 41)**

मानस के अयोध्याकांड के दोहे में प्रकृति हमारे लिए किस प्रकार जीवनदायिनी है तथा वायु भोर एवं रात हमारे लिए किस तरह सुखकर है। प्रकृति जीवन का स्त्रोत है का वर्णन किया है। सीता जी राम से कहती है कि हे नाथ ! आपके साथ पक्षी और पशु ही मेरे कुटुम्बी होंगे, वन ही नगर और वृक्षों की छाल ही निर्मल वस्त्र होंगे और पर्णकुटी (पत्तों की बनी झोपड़ी) ही स्वर्ग के समान सुखों की मूल होगी। उदार हृदय की वनदेवी तथा वनदेवता ही सास–ससुर के समान मेरी रक्षा करेंगे और कुशा एवं पत्तों का बिछौना हीं प्रभु के साथ कामदेव की मनोहर तोशक के समान होगी। कन्द, मूल और फल भी अमृत के समान आहार होंगे–

खग मृग परिजन नगरू बनु बलकत बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल।।

**(रामचरित मानस पृ. 382 दोहा 65)**

मानस में स्पष्ट किया गया है कि प्रकृति मानव के लिए है। वह हमारी माता है। मानस में सभी क्रियाकलाप किसी न किसी तरह से पर्यावरण से सम्बद्ध हैं। इसे पर्यावरण से अलग करके नहीं देखा जा सकता। मानस में राम जी जब वनवास में रहते हैं तब प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –

सरनि सरोरूह जल बिहग, कूजत गुंजत भृंग।
बैर बिगत बिहरत विपिन मृग बिहंग बहुरंग।।

**(दोहा 249)**

अर्थात् तालाबों म कमल खिल रहे हैं, भौरें गुंजार कर रहे हैं और बहुत रंगों के पक्षी और पशु वन में रहित होकर विहार कर रहे हैं।

मानस के अरण्यकाण्ड में जब सीता माता को रावण हरण करके ले जाता है तब (पक्षियों का स्वामी) गृध्रराज जटायु अपने प्राणों की परवाह न करते हुए माता सीता को बचाने की कोशिश करता है –

तब सक्रोध निसिचर खिसिआना।
काढ़ेसि परम कराल कृपाला।।
काटेसि पंख परा खग धरनी
सुमिरि राम करि अद्भुत करनी।।

**(मानस पृ. क्र 644)**

रावण क्रोधयुक्त होकर जटायु के पंख काट डालता है। पक्षी जटायु श्री राम जी की अद्भुत लीला का स्मरण करके पृथ्वी पर गिर पड़ा।

राम जी ने सीता का पता पछने के लिए पशुओं, मौरे, खंजन, तोता, कबूतर, हिरन, मछली भौरों, प्रवीण कोयल का सहारा लिया है। यहाँ पर तुलसीदास जी ने प्राकृतिक उपादनों का सुदर चित्रण किया है–

हे खग मृग हे मधुकर श्रोनी।
तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।।
खंजन सुक कपोत मृग मीना।
मधुप निकर कोकिला प्रबीना।।

**(मानस पृ. क्र. 645)**

इसी प्रकार लक्ष्मण के मूर्छित होने पर हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाना इस बात का प्रतीक है कि वनस्पतियाँ प्राचीनकाल से ही जीवन, पोषण का आधार थी। जंगल को देवता तुल्य माना जाता था। वृक्षों की पूजा उन दिनों गौरव की बात थी।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मानस में पौधों का प्राणियों का महत्व उजागर हुआ है। संपूर्ण मानस का अध्ययन करने से यह बात हमारे समक्ष आती है कि प्रकृति जीवन के पारस्परिक संबंध बड़े भावपूर्ण मार्मिक एवं गहरे है। मानस में सुप्रभात की प्रथम बेला से लेकर रात्रि बेला तक पर्यावरण के अनुग्रह पर ही निर्भर है। मानस में पर्यावरण संरक्षण को हर जन अपना पुण्य–कर्तव्य मानकर चलता था। वन सभ्यता के सामंजस्य से मनुष्य जीवन सुख और समृद्धि से भरा–पूरा रहता है। मानव किस प्रकार से एक–दूसरे से घनिष्ठतापूर्वक जुड़े है। दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित किए बिना सुखकर जीवन व्यतीत करत हैं। नदियाँ, सागर, पर्वत, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी सभी मनुष्य वाणी को समझते हैं तथा कोई भी एक दूसरे को हानि नहीं पहुँचाते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि हमारे ऋषियों ने पेड़ों की पूजा का विधान बनाकर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन का पथ प्रशस्त किया था। प्राचीनकाल की ये भावनाएँ देश के विभिन्न भागों में अभी भी अलग–अलग परम्पराओं का रूप लेकर प्रचलित है। दशहरे पर शमी वृक्ष की पूजा का विधान आज भी हमारे देश के अनेक भागों में प्रचलित है। शिवरात्रि के अवसर पर बेलपत्रों से शिव की उपासना फलदायी मानी जाती है। तुलसी, ऑवला, वट, बेल, नीम, पीपल, महुआ को पूजा जाता है। परंतु वर्तमान में यह दिखाई देता है कि पर्यावरणीय बिगाड़ का कारण बेतहाशा औद्योगीकरण, अन्धाधुन्ध शहरीकरण, ऊर्जा और कच्चे माल के पारम्परिक साधनों की घटोत्तरी प्राकृतिक संतुलनों के विघटन विभिन्न प्राणियों एवं पेड़–पौधों का भारी विनाश ही है। हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम सब मिलकर पर्यावरण की रक्षा करें। तभी मानव बचेगा।

**सदंर्भ ग्रंथ सूची**

1. चतुर्वेदी सत्यदेव ; गोस्वामी तुलसीदास और राम–कथा, प्रकाशक, हिन्दी–साहित्य–सृजन–परिषद् चौक, जौनपुर, उत्तरप्रदेश; संस्करण प्रथम, सन् 1957 ई.।
2. प्रसाद एस. एम. ; रामचरितमानस का सन्देश ; प्रकाशक जगदीश चन्द्र सेठी, सेक्रेटरी राधास्वामी सत्संग व्यास डेरा बाबा जैमल सिंह पंजाब।
3. अखण्ड ज्योति सिंतबर 1997 A View Scanned copy (Internet)
4. गोस्वामी तुलसीदास जी, विरचित रामचरित मानस, गीता प्रेस गोरखपुर गोबिन्द भवन : टीकाकर – हनुमान प्रसाद पोद्दार।
5. डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, गोस्वामी तुलसीदास कृत, विनय पत्रिका (आलोचना मूल पाठ एवं विस्तृत व्याख्या)।